Academe *Journal of Education & Psychology* *ISSN: 2249-040X*
Volume-16, Issue-1, Year-2026 (January-June) *Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)*
PP: 61-66 *Journal Website* www.academejournal.in

दुर्ग जिले की आार्थिक उपलब्धियॉ

Dr. Kalyani

Assistant Professor
Dept. Economics, Dau Uttam Sao Govt College Machandur, Durg (c.g.)

भारत एक विकास शील देश है। भारत में अधिकाश 70% जनसख्या गावों में निवास करती है। गावों का विकास जहॉ तक नहीं होगा तब तक एक देश विकास नहीं कर सकता है। गावो के विकास के लिए गावो का आर्थिक रूप मे सम्पन्न होना चाहिए जब तक किसी देश का आर्थिक विकास नही होगा तब तक किसी देश का सम्पूर्ण विकास नही हो पायेगा क्योकि सम्पूर्ण विकास केवल आर्थिक रूप से सम्पन्न होता है तभी अपने सभी आयामो पर फोकस कर पता है अतः किसी देश राज्य या जिले का विकास करना है तो सबसे पहले उस क्षेत्र का आर्थिक विकास करना आवश्यक होता है। आर्थिक रूप से सम्पन्न क्षेत्र का विकास तेजी से होता है। जिससे उस क्षेत्र मे शिक्षा स्वास्थ्य कृषि उद्योग सेवा क्षेत्र उर्जा संचार परिवहन सभी क्षेत्रो का चहुमुखी विकास होता है।

परिचय

किसी भी देश की सम्पन्न एवं विकसित जब कहा जाता है जब वह देश आार्थिक रूप से प्रगति एवं विकास कर रहा होता है आर्थिक रूप से सम्पन्न देश एक विश्व शक्ति के रूप मे जाता है अतः किसी भी देश राज्य या क्षेत्र को विकसित करने के लिए उस देश राज्य उवं क्षेत्रे को आर्थिक रूप से सम्पन्न बनाना आवश्यक होता है अगर बात की जाए छःग के दुर्ग जिले की दुर्ग जिला आर्थिक रूप से सम्पन्न है क्योकि द्वितीय पंचवर्षीय योजना में रूस के सहयोग से भिलाई इस्पात सयंत्र स्थापित किया गया है। इस प्लांट के स्थापना से दुर्ग जिले एवं आस पास के क्षेत्रों का तेजी से विकास हुआ। प्लांट के स्थापना से यहॉ के लोगों को रोजगार प्राप्त हुआ एवं प्लांट तक कच्चे माल पहुचाने परिवहन साधनो, संचार साधनो, उर्जा संसाधनो अर्थात आधार भूत संरचना का तेजी से विकास किया गया है जिससे ग्रमीण क्षेत्र शहरो से आसानी से जुढ गये और इन क्षेत्रो का भी विकास हुआ आधार भूत संरचनाओ के विकास होने यह क्षेत्र और अधिक तेजी से आर्थिक रूप से प्रगति कैसे लगा साथ ही साथ इन क्षेत्रो के लोगो को रोजगार उपलब्ध हुए जिससे उनके आर्थिक स्थिति मे सुधार हुए इस शोध अध्ययन मे हम पिछले 5 वर्षो मे दुर्ग जिले की आर्थिक उपलब्धियों का अध्ययन का करेगे साथ ही हम यह जानने का प्रयास करेगे कि और कौन कौन से आयाम या क्षेत्र है जिसमे सुधार कर और अधिक सफलता या उपलब्धियों को प्राप्त किया जा सकता है।

दुर्ग जिले का संक्षिप्त परिचय

दुर्ग जिला छत्तीसगढ राज्य के आर्थिक रूप से सम्पन्न जिलो मे से एक है। दुर्ग जिला कल्चुरियो के आधीन किले से प्रशासित होने वाले गढ़ों में से एक गढ़ का मुख्यालय भी रहा है। नगर की स्थापना लगभग दसवी शताब्दी मे जगतपाल नामक राजा द्वारा की गई थी जिले का गठन 1 जनवरी 1906 को किया गया था।

दुर्ग जिले की आर्थिक उपलब्धियॉ

कृषि तथा संबंध सेवाएं

बात की जाय दुर्ग जिले मे कृषि उत्पादकता की तो कृषि उत्पादकता मे तेजी से वृद्धि हुई कृषि उत्पादकता मे प्रति हेक्टयेर के हिसाब मे वृद्वि हुई है। कृषि उत्पादकता मे वृद्धि दुर्ग जिले कृषि ऋण की सहायता मिल जाने से एवं उपज का सही मूल्य मिलने से किसान प्रोत्साहित हुए है। इसके साथ 2 सिंचाई सुविधाओ के मिलने से भी उत्पादकता मे वृद्धि हुई है।

© Copyright @ Authors

कृषि तथा संबंध सेवाएँ

क्र.	विवरण	वर्ष 2018–19	2019–20	2020–21	2021–22	2022–23	औसत
1	कृषि जोतो की संख्या	136246	136246	136264	136264	136246	136246
2	प्रमुख फसलो कें अंतर्गत क्षेत्रफल	371526	406304	411841	407614	30189	325494.8
3	प्रमुख फसलो का प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्विंटल मे	39.852	318.04	398	50.850	2644.32	18812.472
4	खरीफ फसलो के अंतर्गत सकल क्षेत्र हेक्टेयर मे	144411	145120	147684	151853	147909	147395.4
5	रबी फसलो के अंतर्गत सकल क्षेत्र हेक्टेयर में	44703	61994	62480	56300	56155	56326.4
6	सभी स्त्रोतो से सिंचित क्षेत्र हेक्टेयर मे	73125.89	146.678	151.367	109.659	140.993	124364.57
7	उन्नत कृषि के अंतर्गत क्षेत्रफल हेक्टेयर	806.143	849.226	896.077	999.579	982.862	906777.4

स्त्रोतः– सांख्यिकी कार्यालय दुर्ग 2023

उपरोक्त तालिका मे कृषि तथा संबंध सेवाओ के विवरण प्रस्तुत किया गया है। पिछले पॉच वर्षो मे देखा जाए तो कृषि जोतो की संख्या मे कोई वृद्धि नही हुई है। प्रमुख फसलो के अंतर्गत औसतन 325494.8 हेक्टेयर क्षेत्रफल पर फसले बोयी गयी प्रमुख फसलो का प्रति हेक्टेयर उत्पादन औसतन 18812.472 क्विंटल रहा है। खरीफ फसलो के अंतर्गत औसतन 147395.4 हेक्टेयर क्षेत्रफल एवं रबी फसलो के अंतर्गत 56326.4 हेक्टेयर क्षेत्रफल पर फसले बोयी गई है। सभी स्त्रोतो से सिंचित क्षेत्र मे औसतन 124364.57 हेक्टेयर क्षेत्रफल सिंचित रहा है। उन्नत कृषि के अन्तर्गत क्षेत्रफल मे औसतन 906777.4 हेक्टेयर भूमि पर रासायनिक खाद, बीजोपचार, पौध सरंक्षण एवं उन्नत बीज का प्रयोग किया गया है।

उद्योग एवं खनन

दुर्ग जिले मे द्वितीय पंचवर्षीय योजना मे रूस के सहयोग से 1956 मे भिलाई स्टील प्लांट स्थापित किया गया भिलाई स्टील के स्थापित हो जाने से आस पास के क्षेत्रो मे छोटे छोटे उद्योग धंधे स्थापित हुए है। भिलाई स्टील प्लांट की स्थापना मे इस क्षेत्र के अधिकांश परिवारो को रोजगार मिला उनकी आर्थिक स्थिति से सुधार हुआ इसके अलावा और भी छोटे–छोटे उद्योग स्थापित है जहॉ पर हजारो लोग नियोजित हैं।

उद्योग एवं खनिज

क्र.	विवरण	वर्ष 2018–19	2019–20	2020–21	2021–22	2022–23

© Copyright @ Authors

1	कुल स्थापित उद्योग	117	51	69	69	57
2	नियोजित व्यक्ति	532	759	591	802	836
3	औसत दैनिक नियोजन	7721.01	14.88	6951.16	13580.04	15
4	प्रमुख खनिजों का उत्पादन(मी.टन)	278046.21	669185330	7709535.38	7577.026	8967679.006

स्त्रोतः– सांख्यिकी कार्यालय दुर्ग 2023

उपरोक्त तालिका में उद्योग और खनिजो के उत्पादन से संबधित विवरण को प्रस्तुत किया गया है। तालिका से स्पष्ट होता है। कि कुल स्थापित उद्योग की संख्या वर्ष 2.18–19 मे 117 थी वह घटकर वर्ष 2022–23 मे 57 हो गई। उद्योग मे नियोजित व्यक्तियो की संख्या वर्ष 2018–19 मे 532 थी वह बढकर वर्ष 2022–23 मे 836 हो गई। औसत दैनिक नियोजन मे वर्ष 2018–19 मे 7721.01 नियोजित रहे जबकि वह वर्ष 2022–23 मे केवल घटकर केवल 15 रह गई। प्रमुख खनिजों के उत्पादन वर्ष 2018–19 मे 6278046.21 मी. टन था जो वर्ष 2022–23 मे बढकर 89676.006 टन रहा हैं। छटवी एवं आठवी गणना 2012 के अनुसार कुल उद्योगों की संख्या 52645 है। जिसमे 13093 ग्रामीण एवं 39552 नगरीय उद्योग स्थापित है।

मत्स्य पालन

दुर्ग जिले में मत्स्य उत्पादन बढ़ रहा है, खासकर बायोफलॉक तकनीक और मत्स्य पालन पॉलिटेक्निक की स्थापना (राजपुर धमधा) के कारण, जिससे किसान उन्नत तरीकों से भारतीय मेजर कार्प और तिलापिया जैसी मछलियां पाल रहे हैं और किसान बेहतर आय अर्जित कर रहे हैं, जिसे निम्न तालिका द्वारा दिखाया गया है–

क्र	विवरण	वर्ष 2018–19	2019–20	2020–21	2021–22	2022–23
1	मछुआ सहकारी समिति संख्या	07	03	06	02	12
2	सदस्यो संख्या	155	75	55	21	369
3	मत्स्य उत्पादन	28.70	77.58	83.28	34.44	86.71
4	उपलब्ध जलक्षेत्र हेक्टेयर मे	47.85	12.93	13.88	05.75	144.52
5	मत्स्य पालन के अंतर्गत जल क्षेत्र हेक्टेयर मे	47.85	12.93	13.88	05.75	144.52

स्त्रोतः– सांख्यिकी कार्यालय दुर्ग 2023

उपरोक्त तालिका मे मतस्य पालन संबधी विवरण प्रस्तुत है। वर्ष 2018–19 मे मछुआ सहकारी समिति की संख्या 07 थी वह बढकर 2022–23मे 12 ही गयी मछुआ सहकारी समिति मे सदस्यो की संख्या वर्ष 2018–19 मे 155 थी वह बढकर 2022–23 मे 369 हो गई। मतस्य उत्पादन वर्ष 2018–19 मे 28.70 मि. टन था जो बढकर वर्ष 2022–23 मे 86.71 मि.टन रहा। जिले मे उपलब्ध जल क्षेत्र वर्ष 2018–19 मे 47.85 हेक्टेयर था जो बढकर 2022–23 मे 144.52 हेक्टेयर रहा। मतस्य पालन के अंतर्गत वर्ष 2018–19 मे 4.78 हेक्टेयर क्षेत्रफल मे मतस्य पालन किया गया जो वर्ष 2022–23 मे बढकर 144.52 हेक्टेयर रहा।

© Copyright @ Authors

ऊर्जा क्षेत्र

उर्जा के मामले मे भी दुर्ग जिले की उपलब्धियॉ प्राप्त है। दुर्ग जिले मे बिजली उत्पादन के लिए सौर उर्जा का प्रयोग तेजी से होगे लगा है। सौर उर्जा के माध्यम से बिजली उत्पादन किया जाता है।

क्र	विवरण	वर्ष				
		2018–19	2019–20	2020–21	2021–22	2022–23
1	सडको पर रोशनी हजार किलो वाले	1387.466	14112.54	11962.61	12020.94	11362.78
2	कुल विधुत उपभोग हजार किलो वाट घण्टां में	802037.80	817371.58	1133121.511	125303.34	1073595.17
3	कुल विधुत उपभोक्ता संख्या	418679	434631	450375	463467	452222
4	विधुतीकृत ग्राम	384	384	384	384	384
5	विधुतीकृत पम्प सेट	27875	28305	29799	31849	33396
6	प्रति आबाद ग्राम उर्जाकृत पंपसेट	73	74	78	83	87
7	कुल उपभोग से ग्रामीण क्षेत्र मे विधुत उपभोग का प्रतिशत	100	100	100	100	100

स्त्रोतः– सांख्यिकी कार्यालय दुर्ग 2023

उपरोक्त सारणी में विद्युतीकरण से संबधित विवरण प्रस्तुत है। सडको पर रोशनी की व्यवस्था वर्ष 2018–19 मे 13687.446 हजार किलोवाट थी जो बढकर वर्ष 2022–23 मे 11362.78 हजार किलोवाट था। कुल विद्युत उपभोग वर्ष 2018–19 मे 802037.80 हजार किलोवाट घण्टे था जो वर्ष 2022–23 मे बढकर 1073595.17 हजार किलोवाट घण्टे रहे। कुल विद्युत उपभोक्ताओ की संख्या वर्ष 2018–19 मे 418679 था जो बढकर वर्ष 2022–23 मे 452222 हो गयी। कुल विद्युतीकृत ग्राम 384 है। विद्युतीकृत पमपसेट की संख्या वर्ष 2018–19 मे 27875 थी जो बढकर वर्ष 2022–23 मे 33396 हो गई। प्रति आवाद ग्राम मे उर्जीकृत पंम्पसेट की संख्या वर्ष 2.18–19 मे 73 थी जो बढकर वष्र 2022–23 मे 87 हो गई ग्रामीण क्षेत्रो मे विद्युत उपभोग का प्रतिशत 100 रहा है।

परिवहन एवं यातायात

दुर्ग जिले मे परिवहन साधनो का तेजी से विकास हुआ। गांव से शहर से बडे शहरों को जोडने वाली सडकों का निर्माण हुआ एवं इसके बजाय यातायात के साधनो के विकास मे भी वृद्वि हुई पिछले 5 वर्षो मे यातायात के साधनो मे ट्रक, बस, जीप, टैक्टर, आटो इत्यादि साधनों का विकास हुआ हैं।

वर्ष	पक्की सड़के				कच्ची सड़के					महायोग
	प्रधानमंत्री सड़क	लोक निर्माण विभाग	स्थानीय निकाय	योग	प्रधानमंत्री सड़क	लोक निर्माण विभाग	स्थानीय निकाय	वन विभाग	योग	
2018–	8	1458.	0	1466.	0	6.50	0	0	6.	1472.

© Copyright @ Authors

19		37		37					50	87
2019–20	8	1497.37	0	1505.37	0	5.20	0	0	5.20	1510.57
2020–21	13	1548.70	0	1561.7	0	28.05	0	0	28.05	1589.75
2021–22	13	1548.71	0	1561.71	0	28.05	0	0	28.05	1589.76
2022–23	0	1587.94	0	1587.94	0	27.15	0	0	27.15	1615.09

स्त्रोतः– लोक निर्माण विभाग, सांख्यिकी कार्यालय दुर्ग 2023

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि वर्ष 2018–19 में 1472.87 सड़कों का निर्माण किया गया, जिसमें पक्की सड़के एवं कच्ची सड़के दोनों का निर्माण हुआ है। वर्ष 2019–20 में 1510.57 सड़के, वर्ष 2020–21 में 1589.75 सड़के, वर्ष 2021–22 में 1589.76 सड़के एवं वर्ष 2022–23 में 1615.09 सड़कों का निर्माण हुआ है। ज्यादातर सड़कों का निर्माण लोक निर्माण विभाग द्वारा किया गया है एवं कुछ सड़कों का निर्माण प्रधानमंत्री सड़क निर्माण योजना के अंतर्गत हुआ है।

कुल पंजीकृत वाहन

वर्ष	कार एवं जीप	टैक्सी, कैब एवं तिपहिया	बस एवं मिनी बस	माल वाहन	द्विपहिया	ट्रेक्टर एवं ट्राली	अन्य	योग
2018–19	6197	193	86	1617	39467	864	596	49014
2019–20	6074	234	127	1147	41220	1026	38	50214
2020–21	5737	117	24	598	26540	960	292	34268
2021–22	6004	117	10	954	25516	682	432	33715
2022–23	6325	783	85	2242	29554	909	624	40522

स्त्रोतः– जिला क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी, सांख्यिकी कार्यालय दुर्ग 2023

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि कुल पंजीकृत वाहनों की संख्या वर्ष 2018–19 में 49014 थी, जो बढ़कर वर्ष 2019–20 में 50214 हो गई। वर्ष 2020–21 में घटकर 34268 एवं वर्ष 2021–22 में 33714 हो गई। वर्ष 2022–23 में बढ़कर वर्ष 40522 हो गई। पंजीकृत वाहनों की संख्या में कमी आई हैं। कुल पंजीकृत वाहनों में कार एवं जीप, टैक्सी, कैब एवं तिपहिया, बस एवं मिनी बस, माल वाहन, द्विपहिया, ट्रेक्टर एवं ट्राली एवं अन्य वाहन शामिल हैं।

संचार साधनों का विकास

दुर्ग जिले मे संचार साधनों का भी तेजी से विकास हुआ हैं। दुर्ग जिले में संचार साधनों में मुख्य डाकघर स्थापित हुए एवं अन्य उपडाकघर विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित है। संचार साधनो में टेलीफोन, मोबाइल फोन, फैक्स की भी सुविधाएँ उपलब्ध है।

वर्ष	प्रधान डाकघर	उपडाकघर	अतिरिक्त विभागीय शाखा	योग
2018–19	2	40	98	140
2019–20	2	40	83	125
2020–21	1	41	83	125
2021–22	1	41	83	125
2022–23	1	41	83	125

स्त्रोतः– मुख्य डाकघर, सांख्यिकी कार्यालय दुर्ग 2023

© Copyright @ Authors

उपर्रोक्त तालिका से ज्ञात होता हैं, कि वर्ष 2018–19 में कुल 140 डाकघर थे, जिसमें 2 प्रधान डाकघर, 40 उपडाकघर एवं 98 अतिरिक्त विभागीय शाखाएं थी जबकि वर्ष 2022–23 में यह घटकर कम हो गई। वर्ष 2022–23 कुल 125 डाकघर है, जिसमें 1 प्रधान डाकघर, 41 उपडाकघर एवं 83 अतिरिक्त विभागीय शाखाएं हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम निष्कर्ष पर पहुचते हैं कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से देश के साथ–साथ छत्तीसगढ़ राज्य का तेजी से विकास हुआ हैं। छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण करते समय श्री अटल जी ने कहां था कि नैसर्गिक साधनों से संपन्न इस प्रदेश में अपार संभावनाएं है। छत्तीसगढ़ राज्य का दुर्ग जिला निरंतर विकास की सीढ़िया चढ़ते गया। दुर्ग जिले में भिलाई स्टील प्लांट की स्थापना कर परिवहन साधनों, संचार साधनों, उर्जा संसाधनों अर्थात आधार भूत संरचना का तेजी से विकास किया गया है, जिससे इस क्षेत्र का विकास हुआ हैं। गांव सड़कों से जुड़े तथा बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधा एवं रोजगार मिलने से पलायन में कमी आयी। इस शोध अध्ययन में हम पिछले 5 वर्षो में दुर्ग जिले की आर्थिक उपलब्धियों का अध्ययन किया और यह पाया कि दुर्ग जिला आर्थिक रूप से बहुत ही सम्पन्न जिला हैं।

संदर्भग्रंथ

1- निवेदिता ए.लाल एवं चैतन्यनंद (2011) – 'छत्तीसगढ़ में जोत के आकार का वितरण प्रतिरूप' Research journal humanities & social sciences, ISSN – 0975-6795, Page – 196-200, 2011.

2- प्रीति तन्ना एवं डॉ.एस.एन.झा (2013) – 'दुर्ग जिले की आार्थिक उपलब्धियॉ',एंडु जंक्शन, ISSN No.2278-3938, vol.03, April-June 2013, Page no.36-38.

3- अनुसूइया बघेल एवं तृप्ति राजपूत (2013) – 'दुर्ग जिले में जोत का आकार एवं कृषि प्रतिरूप' Journal of Ravishankar University, Part-A, ISSN-0970-5910, 2013, page-16-18.

4- श्रीकमल शर्मा (2016) – 'छत्तीसगढ़ की विकास के यर्थाथ सापेक्षिक तथा क्षेत्रीय आयाम' International journal advances social sciences,march 2016, ISSN-2454-2679, Page-13-27.

5- तुलाराम ठाकुर (2016) – 'छत्तीसगढ़ के आर्थिक विकास में खनिज तत्वों की भूमिका'(खनिज स्त्रोत के माध्यम से राज्यअके आर्थिक विकास में सुधार), International journal advances social sciences,sep- 2016, ISSN-2347-5153, Page-143-148.

6- जया गुप्ता (2019) – 'छत्तीसगढ़ का भौगोलिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिचय, International journal of reviews & research in social sciences,2019, ISSN-2454-2687, Page-139-200.

7- पद्यमनी सिन्हा एवं आभा रूपेन्द्र पाल (2019) –'दुर्ग जिले में सिंचाई संसाधन और तांदुला परियोजना, Mind & socity,2019, Page-64-71.

8- पंकज कुमार (2024) – 'छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले की आर्थिक स्थिति का अध्ययन'(पाटन एवं धमधा तहसील के विशेष संदर्भ में), International journal of reviews & research in social sciences,2024, ISSN-2454-2687, Page-287-200.

9- आर्थिक सर्वेक्षण 2023–24

10- आर्थिक एवं सांख्यिकी कार्यालय जिला–दुर्ग(छ.ग.)2023–24

11- www.durg.gov.in

© Copyright @ Authors